

Inhalt

| | |
|-----|--|
| 5 | Vorwort |
| 7 | Beginn: Das Narrativ |
| 8 | I. Denkvoraussetzungen |
| 8 | 1. Über Notwendigkeit |
| 10 | 2. Über Religion |
| 12 | 3. Über „Objekt-Ontologie“ |
| 17 | 4. Über Erfahrung |
| 28 | 5. Über Intuition |
| 34 | II. Traditionelle Denkmöglichkeiten |
| 34 | 1. Gott als Eigenschaft |
| 37 | 2. Gott als Name |
| 42 | 3. Gott als Person |
| 47 | 4. Gott als Uhrmacher |
| 50 | 5. Gott als Wirkung |
| 54 | 6. Gott als Setzung |
| 58 | 7. Gott als Prädestination |
| 66 | 8. Theodizee |
| 73 | 9. Zusammenfassung |
| 75 | III. Alternative Denkmöglichkeiten |
| 75 | 1. Der allanwesende Gott |
| 79 | 2. Der überseiende Gott |
| 86 | 3. Der trinitarische Gott (1) |
| 88 | 4. Exkurs: Jesus, der Christus |
| 88 | 4.1. Jesus (1) |
| 91 | 4.2. Jesus (2) |
| 111 | 4.3. Jesus (3) |
| 117 | 5. Der trinitarische Gott (2) |

131 IV. Unbedingte Möglichkeit

- 131 1. Eine Ontologie des Verlaufs ...
- 140 2. ... und ihre modale Ergänzung
- 152 3. Von der potentia absoluta ...
- 159 4. ... und dem dreifachen Werden

171 V. Entfaltung

- 171 1. Gott
- 178 1.1. Der Vater
- 185 1.2. Der Sohn
- 192 1.3. Der Geist
- 202 2. Mensch
- 217 3. Welt
- 227 4. Liebe
- 236 5. Auferstehung

241 VI. Konsequenzen

- 241 1. Bewährung
- 244 2. Vereinigung
- 253 3. Klärungen
- 253 3.1. Realität
- 255 3.2. Differenzen
- 260 3.3. Regression
- 263 3.4. Verwirklichungen
- 269 3.5. Theodizee
- 272 4. Zusammenfassung

280 Schluss: Das Narrativ